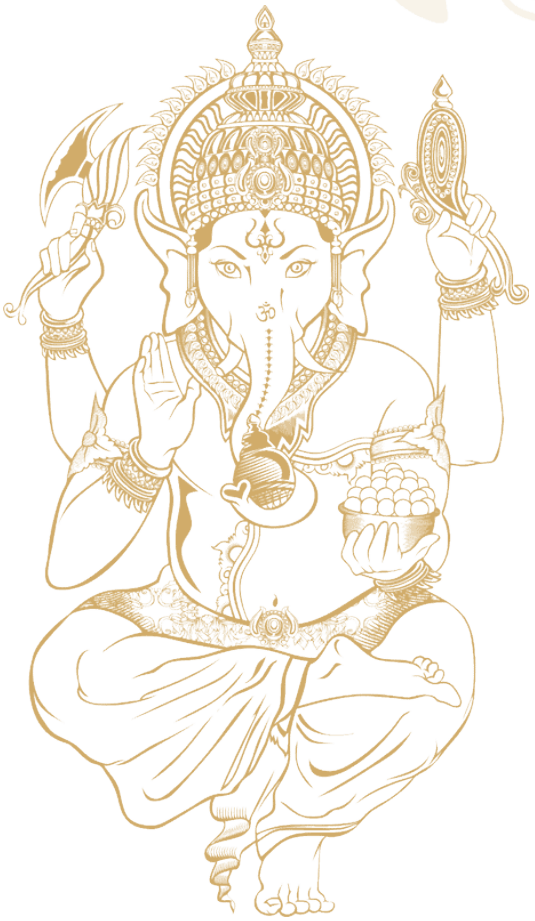

Gajananwarudkar

21 Jun 1984

11:35 AM

Jintur

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121630101**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**21/06/1984**
दिवस	गुरुवार
जन्म समय	**11:35:00 कला**
इष्ट	14:33:06 घटी
स्थान	**Jintur**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:38:00 उत्तर
रेखांश	76:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:23:20 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:11:40 कला
वेलान्तर	-00:01:43 कला
साम्पातिक वेल	05:10:10 कला
सूर्योदय	05:45:45 कला
सूर्यास्त	19:04:26 कला
दिनमान	13:18:41 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	06:24:21 मिथुन
लग्नाचे अंश	24:37:05 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	सिंह – रवि
राशि–स्वामी	**मीन – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**उ.भाद्रपद – 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सौभाग्य
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दू–दुर्जय
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1906	ज्येष्ठ	31
पंजाबी	संवत : 2041	आषाढ़	8
बंगाली	सन् : 1391	आषाढ़	7
तमिल	संवत : 2041	अनी	8
केरल	कोल्लम : 1159	मिधुनम	7
नेपाली	संवत : 2041	आषाढ़	8
चैत्रादी	संवत : 2041	आषाढ़	कृष्ण 8
कार्तिकादी	संवत : 2041	ज्येष्ठ	कृष्ण 8

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 8
तिथि समाप्ति वेल _____: 05:48:57
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: पू.भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 10:02:50 कला
जन्म योग _____: उ.भाद्रपद
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 10:38:57 कला
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 16:39:36 कला
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 03:50:27
भभोग _____: 67:12:28
भोग्य दशा वेल _____: शनि 17 वर्ष 10 मा 30 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
रवि _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृषभ
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

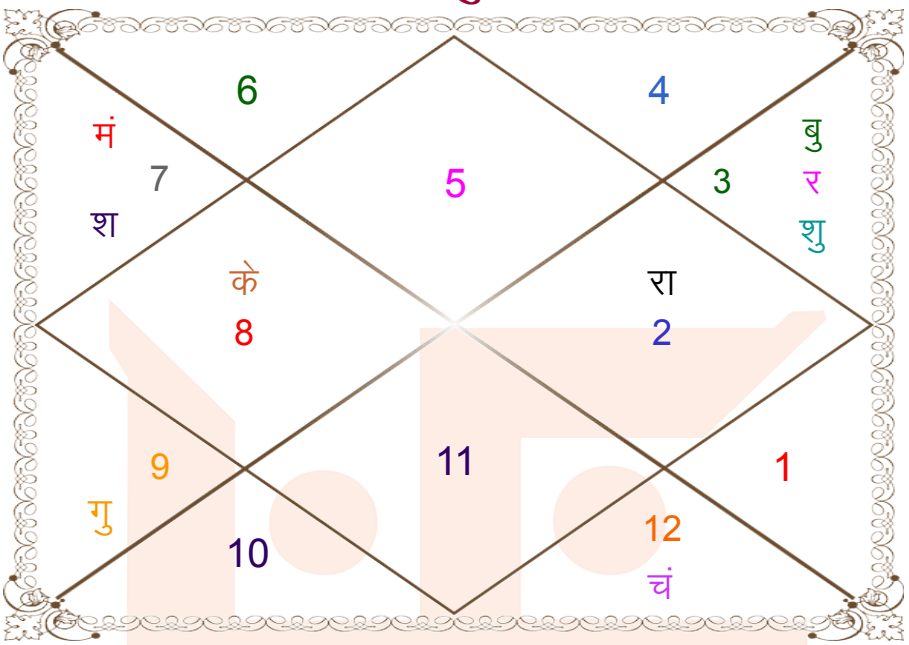

चन्द्र कुंडली

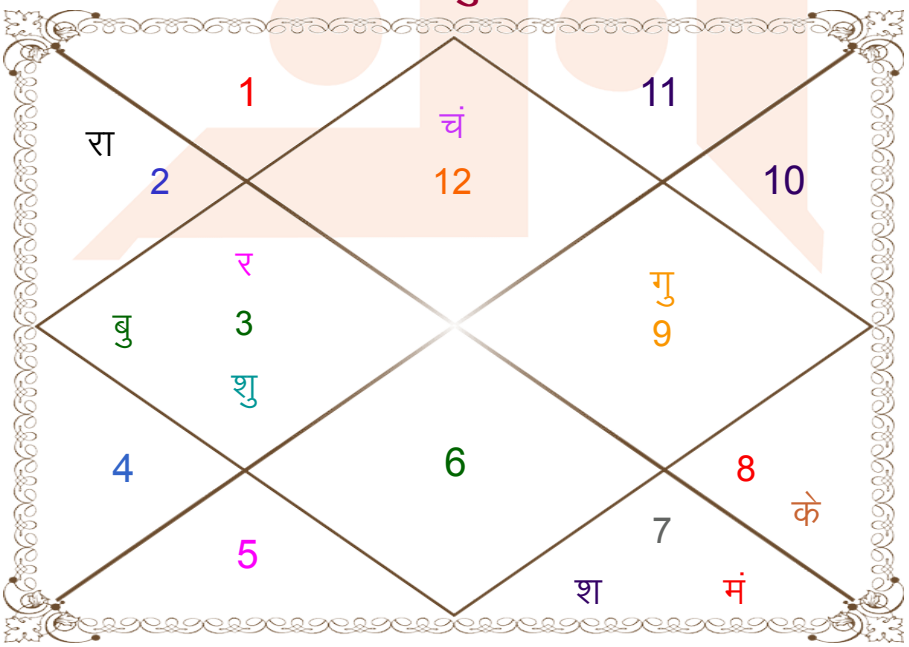

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

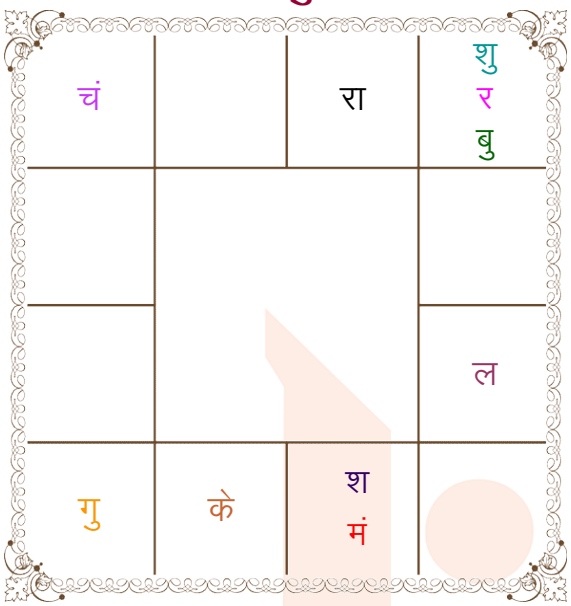

लग्न कुंडली

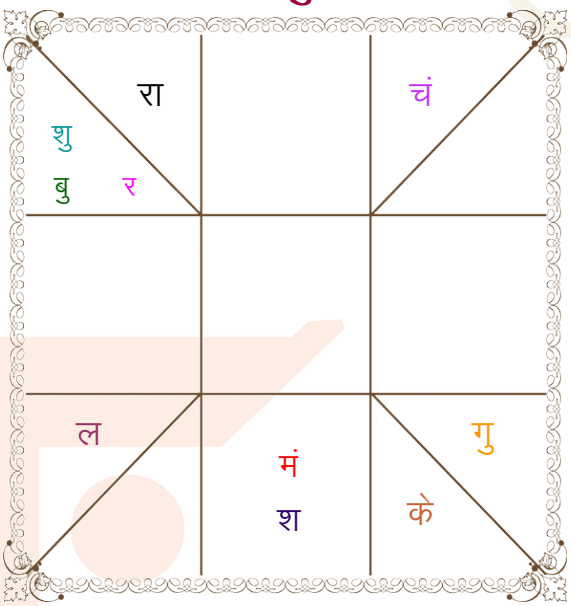

विंशोत्तरी

शनि 17वर्ष 10मा 30दि

शनि

21/06/1984

23/05/2103

शनि	22/05/2002
बुध	22/05/2019
केतु	22/05/2026
शुक्र	22/05/2046
रवि	21/05/2052
चन्द्र	22/05/2062
मंगळ	22/05/2069
राहु	22/05/2087
गुरु	23/05/2103

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 8मा 17दि

उल्का

09/03/2025

10/03/2031

उल्का	09/03/2026
सिद्धा	09/05/2027
संकटा	07/09/2028
मंगळा	07/11/2028
पिंगला	09/03/2029
धान्या	08/09/2029
भ्रामरी	09/05/2030
भद्रिका	10/03/2031

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	24:37:05	339:20:36	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	———
सूर्य			मिथु	06:24:21	00:57:15	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगळ	चंद्र	सम राशि
चंद्र			मीन	04:05:38	11:52:53	उ.भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगळ			तुला	18:04:41	00:01:12	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	सम राशि
बुध		अ	मिथु	04:07:09	02:11:29	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगळ	शुक्र	स्वगृही
गुरु	व		धनु	15:30:34	00:07:29	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	स्वगृही
शुक्र		अ	मिथु	07:51:46	01:13:43	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	मित्र राशि
शनि	व		तुला	16:27:14	00:02:05	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		वृष	12:42:09	00:00:19	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	12:42:09	00:00:19	अनुराधा	3	17	मंगळ	शनि	मंगळ	मित्र राशि
हर्ष	व		वृश्चि	17:09:09	00:02:17	ज्येष्ठा	1	18	मंगळ	बुध	बुध	———
नेप	व		धनु	06:24:46	00:01:37	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	———
प्लूटो	व		तुला	05:46:13	00:00:36	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगळ	चंद्र	———
दशम भाव			वृष	24:54:11	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगळ	राहु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:38:09

लग्न–चलित

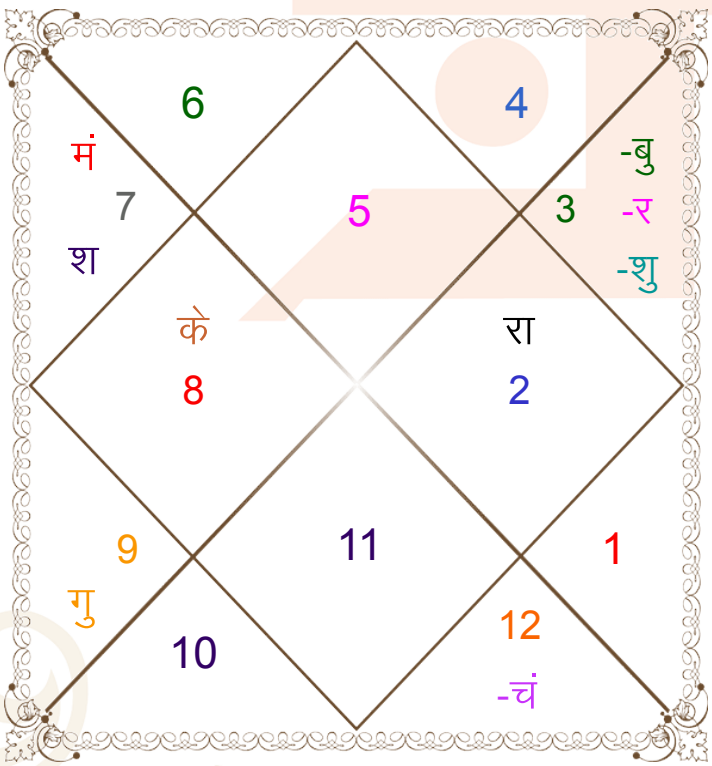

चन्द्र कुंडली

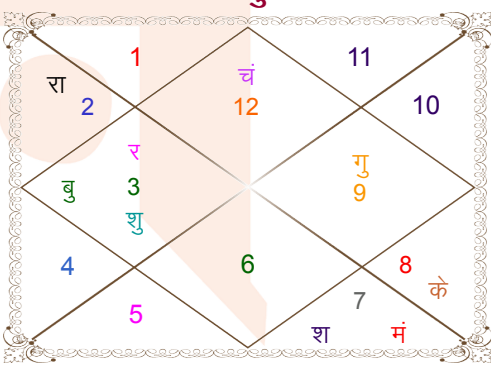

नवमांश कुंडली

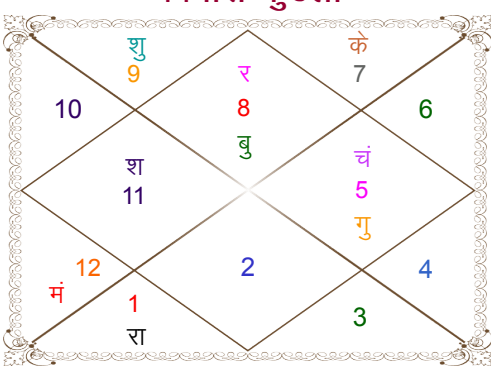

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	09:39:56	सिंह	24:37:05
2	कन्या	09:39:56	कन्या	24:42:47
3	तुला	09:45:38	तुला	24:48:29
4	वृश्चिक	09:51:20	वृश्चिक	24:54:11
5	धनु	09:51:20	धनु	24:48:29
6	मकर	09:45:38	मकर	24:42:47
7	कुम्भ	09:39:56	कुम्भ	24:37:05
8	मीन	09:39:56	मीन	24:42:47
9	मेष	09:45:38	मेष	24:48:29
10	वृषभ	09:51:20	वृषभ	24:54:11
11	मिथुन	09:51:20	मिथुन	24:48:29
12	कर्क	09:45:38	कर्क	24:42:47

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	24:37:05
2	कन्या	23:37:55
3	तुला	24:15:25
4	वृश्चिक	24:54:11
5	धनु	25:07:40
6	मकर	25:10:41
7	कुम्भ	24:37:05
8	मीन	23:37:55
9	मेष	24:15:25
10	वृषभ	24:54:11
11	मिथुन	25:07:40
12	कर्क	25:10:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद

चलित कुंडली

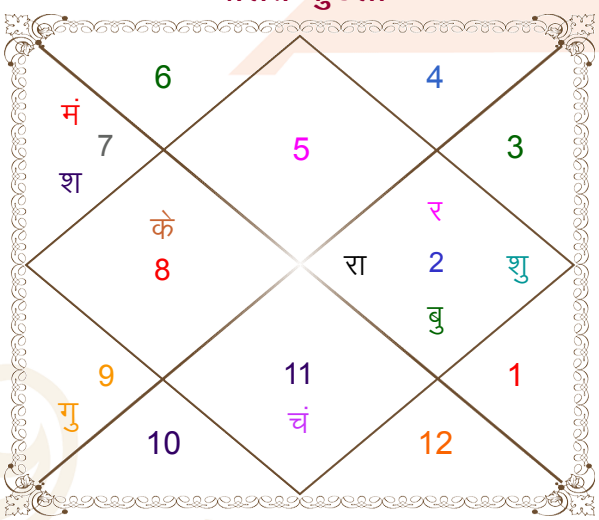

भाव कुंडली

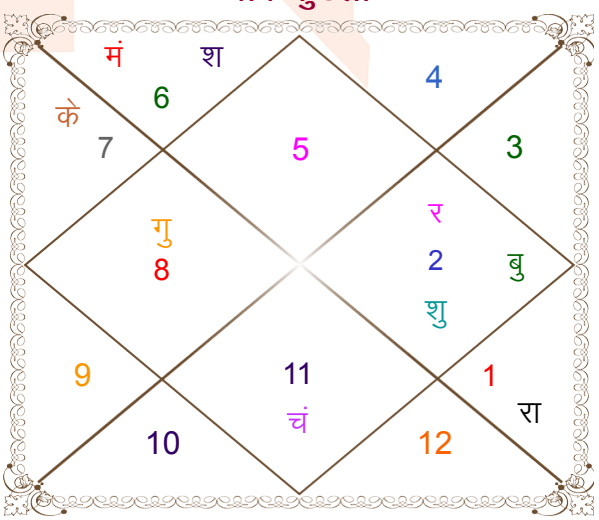

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	निपीदित	सभा	3.43	63 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	निपीदित	गमन	7.27	46 %
मंगळ	आत्मा	भ्रातृ	वृद्ध	शक्त	नेत्रपाणि	1.11	20 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	बाल	विकल	शयन	0.00	40 %
गुरु	भ्रातृ	धन	युवा	स्वस्थ	गमन	1.14	71 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	कुमार	विकल	भोजन	4.85	15 %
शनि	अमात्य	आयुष्य	युवा	दीप्त	आगमन	14.70	48 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	मुदित	गमन	0.00	81 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	मुदित	भोजन	0.00	81 %
एकुण						**32.50**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद

चलित कुंडली

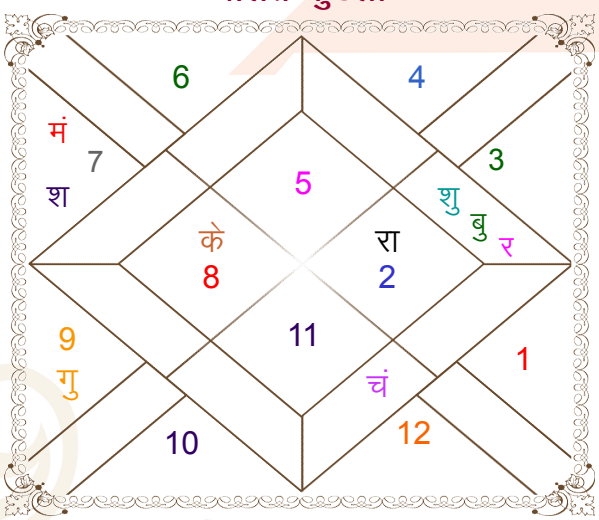

लग्न–चलित

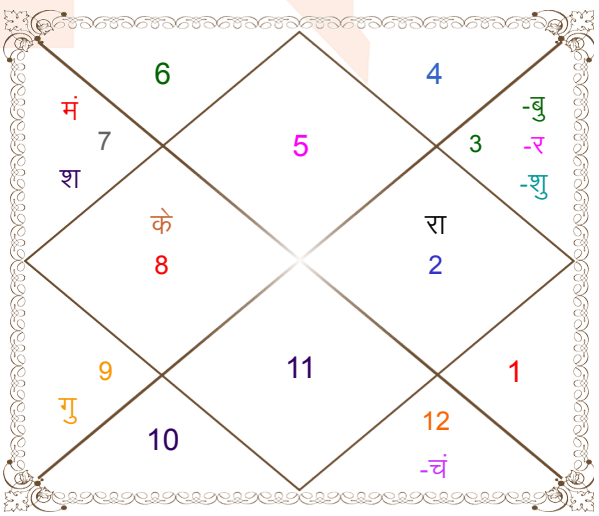

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शनि 17 वर्ष 10 महिना 30 दिवस

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
21/06/1984		22/05/2002		22/05/2019		22/05/2026		22/05/2046	
22/05/2002		22/05/2019		22/05/2026		22/05/2046		21/05/2052	
शनि	25/05/1986	बुध	18/10/2004	केतु	18/10/2019	शुक्र	20/09/2029	सूर्य	09/09/2046
बुध	01/02/1989	केतु	15/10/2005	शुक्र	17/12/2020	सूर्य	21/09/2030	चंद्र	10/03/2047
केतु	13/03/1990	शुक्र	15/08/2008	सूर्य	24/04/2021	चंद्र	21/05/2032	मंगळ	16/07/2047
शुक्र	13/05/1993	सूर्य	21/06/2009	चंद्र	23/11/2021	मंगळ	22/07/2033	राहु	09/06/2048
सूर्य	25/04/1994	चंद्र	21/11/2010	मंगळ	22/04/2022	राहु	21/07/2036	गुरु	28/03/2049
चंद्र	24/11/1995	मंगळ	18/11/2011	राहु	10/05/2023	गुरु	22/03/2039	शनि	10/03/2050
मंगळ	02/01/1997	राहु	06/06/2014	गुरु	15/04/2024	शनि	22/05/2042	बुध	14/01/2051
राहु	09/11/1999	गुरु	11/09/2016	शनि	25/05/2025	बुध	22/03/2045	केतु	22/05/2051
गुरु	22/05/2002	शनि	22/05/2019	बुध	22/05/2026	केतु	22/05/2046	शुक्र	21/05/2052

चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
21/05/2052		22/05/2062		22/05/2069		22/05/2087		23/05/2103	
22/05/2062		22/05/2069		22/05/2087		23/05/2103		00/00/0000	
चंद्र	22/03/2053	मंगळ	18/10/2062	राहु	02/02/2072	गुरु	09/07/2089	शनि	22/06/2104
मंगळ	21/10/2053	राहु	06/11/2063	गुरु	27/06/2074	शनि	21/01/2092		00/00/0000
राहु	22/04/2055	गुरु	11/10/2064	शनि	03/05/2077	बुध	28/04/2094		00/00/0000
गुरु	21/08/2056	शनि	20/11/2065	बुध	21/11/2079	केतु	03/04/2095		00/00/0000
शनि	22/03/2058	बुध	18/11/2066	केतु	08/12/2080	शुक्र	02/12/2097		00/00/0000
बुध	22/08/2059	केतु	16/04/2067	शुक्र	09/12/2083	सूर्य	21/09/2098		00/00/0000
केतु	22/03/2060	शुक्र	15/06/2068	सूर्य	02/11/2084	चंद्र	21/01/2100		00/00/0000
शुक्र	20/11/2061	सूर्य	21/10/2068	चंद्र	04/05/2086	मंगळ	28/12/2100		00/00/0000
सूर्य	22/05/2062	चंद्र	22/05/2069	मंगळ	22/05/2087	राहु	23/05/2103		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शनि 17 वर्ष 10 मा 29 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ	
25/05/2025		22/05/2026		20/09/2029		21/09/2030		21/05/2032	
22/05/2026		20/09/2029		21/09/2030		21/05/2032		22/07/2033	
बुध	15/07/2025	शुक्र	11/12/2026	सूर्य	09/10/2029	चंद्र	10/11/2030	मंगळ	15/06/2032
केतु	05/08/2025	सूर्य	10/02/2027	चंद्र	08/11/2029	मंगळ	16/12/2030	राहु	18/08/2032
शुक्र	05/10/2025	चंद्र	22/05/2027	मंगळ	29/11/2029	राहु	17/03/2031	गुरु	14/10/2032
सूर्य	23/10/2025	मंगळ	01/08/2027	राहु	23/01/2030	गुरु	06/06/2031	शनि	21/12/2032
चंद्र	22/11/2025	राहु	31/01/2028	गुरु	13/03/2030	शनि	11/09/2031	बुध	19/02/2033
मंगळ	13/12/2025	गुरु	11/07/2028	शनि	10/05/2030	बुध	06/12/2031	केतु	16/03/2033
राहु	05/02/2026	शनि	20/01/2029	बुध	01/07/2030	केतु	11/01/2032	शुक्र	26/05/2033
गुरु	26/03/2026	बुध	11/07/2029	केतु	22/07/2030	शुक्र	21/04/2032	सूर्य	16/06/2033
शनि	22/05/2026	केतु	20/09/2029	शुक्र	21/09/2030	सूर्य	21/05/2032	चंद्र	22/07/2033

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
22/07/2033		21/07/2036		22/03/2039		22/05/2042		22/03/2045	
21/07/2036		22/03/2039		22/05/2042		22/03/2045		22/05/2046	
राहु	02/01/2034	गुरु	28/11/2036	शनि	21/09/2039	बुध	16/10/2042	केतु	16/04/2045
गुरु	28/05/2034	शनि	01/05/2037	बुध	03/03/2040	केतु	15/12/2042	शुक्र	26/06/2045
शनि	18/11/2034	बुध	16/09/2037	केतु	10/05/2040	शुक्र	05/06/2043	सूर्य	17/07/2045
बुध	22/04/2035	केतु	12/11/2037	शुक्र	19/11/2040	सूर्य	27/07/2043	चंद्र	22/08/2045
केतु	25/06/2035	शुक्र	24/04/2038	सूर्य	15/01/2041	चंद्र	21/10/2043	मंगळ	15/09/2045
शुक्र	24/12/2035	सूर्य	11/06/2038	चंद्र	22/04/2041	मंगळ	21/12/2043	राहु	18/11/2045
सूर्य	17/02/2036	चंद्र	31/08/2038	मंगळ	28/06/2041	राहु	24/05/2044	गुरु	14/01/2046
चंद्र	18/05/2036	मंगळ	27/10/2038	राहु	19/12/2041	गुरु	09/10/2044	शनि	23/03/2046
मंगळ	21/07/2036	राहु	22/03/2039	गुरु	22/05/2042	शनि	22/03/2045	बुध	22/05/2046

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
22/05/2046		09/09/2046		10/03/2047		16/07/2047		09/06/2048	
09/09/2046		10/03/2047		16/07/2047		09/06/2048		28/03/2049	
सूर्य	27/05/2046	चंद्र	24/09/2046	मंगळ	18/03/2047	राहु	03/09/2047	गुरु	18/07/2048
चंद्र	06/06/2046	मंगळ	04/10/2046	राहु	06/04/2047	गुरु	17/10/2047	शनि	02/09/2048
मंगळ	12/06/2046	राहु	01/11/2046	गुरु	23/04/2047	शनि	08/12/2047	बुध	13/10/2048
राहु	28/06/2046	गुरु	25/11/2046	शनि	13/05/2047	बुध	24/01/2048	केतु	30/10/2048
गुरु	13/07/2046	शनि	24/12/2046	बुध	31/05/2047	केतु	12/02/2048	शुक्र	18/12/2048
शनि	30/07/2046	बुध	19/01/2047	केतु	08/06/2047	शुक्र	07/04/2048	सूर्य	02/01/2049
बुध	15/08/2046	केतु	30/01/2047	शुक्र	29/06/2047	सूर्य	23/04/2048	चंद्र	26/01/2049
केतु	21/08/2046	शुक्र	01/03/2047	सूर्य	05/07/2047	चंद्र	21/05/2048	मंगळ	12/02/2049
शुक्र	09/09/2046	सूर्य	10/03/2047	चंद्र	16/07/2047	मंगळ	09/06/2048	राहु	28/03/2049

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
28/03/2049		10/03/2050		14/01/2051		22/05/2051		21/05/2052	
10/03/2050		14/01/2051		22/05/2051		21/05/2052		22/03/2053	
शनि	22/05/2049	बुध	23/04/2050	केतु	22/01/2051	शुक्र	22/07/2051	चंद्र	16/06/2052
बुध	10/07/2049	केतु	11/05/2050	शुक्र	12/02/2051	सूर्य	09/08/2051	मंगळ	04/07/2052
केतु	30/07/2049	शुक्र	02/07/2050	सूर्य	19/02/2051	चंद्र	09/09/2051	राहु	18/08/2052
शुक्र	26/09/2049	सूर्य	17/07/2050	चंद्र	01/03/2051	मंगळ	30/09/2051	गुरु	28/09/2052
सूर्य	13/10/2049	चंद्र	12/08/2050	मंगळ	09/03/2051	राहु	24/11/2051	शनि	15/11/2052
चंद्र	11/11/2049	मंगळ	30/08/2050	राहु	28/03/2051	गुरु	12/01/2052	बुध	28/12/2052
मंगळ	02/12/2049	राहु	16/10/2050	गुरु	14/04/2051	शनि	09/03/2052	केतु	15/01/2053
राहु	23/01/2050	गुरु	26/11/2050	शनि	04/05/2051	बुध	30/04/2052	शुक्र	07/03/2053
गुरु	10/03/2050	शनि	14/01/2051	बुध	22/05/2051	केतु	21/05/2052	सूर्य	22/03/2053

चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
22/03/2053		21/10/2053		22/04/2055		21/08/2056		22/03/2058	
21/10/2053		22/04/2055		21/08/2056		22/03/2058		22/08/2059	
मंगळ	03/04/2053	राहु	11/01/2054	गुरु	26/06/2055	शनि	20/11/2056	बुध	03/06/2058
राहु	05/05/2053	गुरु	25/03/2054	शनि	11/09/2055	बुध	10/02/2057	केतु	04/07/2058
गुरु	03/06/2053	शनि	20/06/2054	बुध	19/11/2055	केतु	16/03/2057	शुक्र	28/09/2058
शनि	06/07/2053	बुध	05/09/2054	केतु	17/12/2055	शुक्र	20/06/2057	सूर्य	24/10/2058
बुध	06/08/2053	केतु	07/10/2054	शुक्र	07/03/2056	सूर्य	19/07/2057	चंद्र	06/12/2058
केतु	18/08/2053	शुक्र	07/01/2055	सूर्य	01/04/2056	चंद्र	05/09/2057	मंगळ	05/01/2059
शुक्र	22/09/2053	सूर्य	03/02/2055	चंद्र	11/05/2056	मंगळ	09/10/2057	राहु	24/03/2059
सूर्य	03/10/2053	चंद्र	21/03/2055	मंगळ	09/06/2056	राहु	04/01/2058	गुरु	01/06/2059
चंद्र	21/10/2053	मंगळ	22/04/2055	राहु	21/08/2056	गुरु	22/03/2058	शनि	22/08/2059

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु	
22/08/2059		22/03/2060		20/11/2061		22/05/2062		18/10/2062	
22/03/2060		20/11/2061		22/05/2062		18/10/2062		06/11/2063	
केतु	03/09/2059	शुक्र	01/07/2060	सूर्य	29/11/2061	मंगळ	31/05/2062	राहु	15/12/2062
शुक्र	08/10/2059	सूर्य	31/07/2060	चंद्र	15/12/2061	राहु	22/06/2062	गुरु	04/02/2063
सूर्य	19/10/2059	चंद्र	20/09/2060	मंगळ	25/12/2061	गुरु	12/07/2062	शनि	05/04/2063
चंद्र	06/11/2059	मंगळ	26/10/2060	राहु	22/01/2062	शनि	05/08/2062	बुध	30/05/2063
मंगळ	18/11/2059	राहु	25/01/2061	गुरु	15/02/2062	बुध	26/08/2062	केतु	21/06/2063
राहु	20/12/2059	गुरु	16/04/2061	शनि	16/03/2062	केतु	03/09/2062	शुक्र	24/08/2063
गुरु	18/01/2060	शनि	22/07/2061	बुध	11/04/2062	शुक्र	28/09/2062	सूर्य	12/09/2063
शनि	20/02/2060	बुध	16/10/2061	केतु	22/04/2062	सूर्य	06/10/2062	चंद्र	14/10/2063
बुध	22/03/2060	केतु	20/11/2061	शुक्र	22/05/2062	चंद्र	18/10/2062	मंगळ	06/11/2063

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिवस	मंगळ, रवि, गुरू
शुभ ग्रह	मंगळ, रवि, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	सूर्य मणि, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	पोवले
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गहू
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	86%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पोवले	मंगळ	78%	पराक्रम, भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	76%	धनार्जन, धन
पुष्कराज	गुरु	76%	सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
हीरा	शुक्र	70%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	67%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	61%	सुख, पराक्रम
नीलम	शनि	3%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

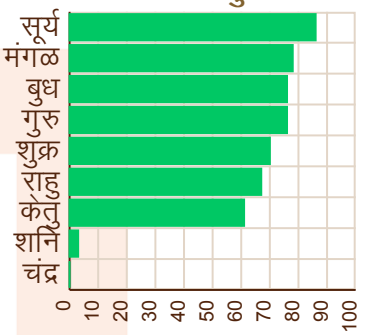

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	22/05/2002	73%	0%	66%	82%	76%	77%	28%	73%	47%
बुध	22/05/2019	92%	0%	78%	89%	76%	77%	3%	67%	61%
केतु	22/05/2026	73%	0%	84%	76%	76%	77%	0%	55%	73%
शुक्र	22/05/2046	73%	0%	78%	82%	76%	83%	16%	73%	67%
सूर्य	21/05/2052	98%	0%	84%	76%	82%	58%	0%	55%	47%
चंद्र	22/05/2062	92%	0%	78%	82%	76%	70%	3%	55%	47%
मंगळ	22/05/2069	92%	0%	91%	64%	82%	70%	3%	55%	67%
राहु	22/05/2087	73%	0%	66%	76%	76%	77%	16%	80%	47%
गुरु	23/05/2103	92%	0%	84%	64%	89%	58%	3%	67%	61%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

अष्टमस्थान चरण	21/06/1984-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

द्वितीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थस्थान चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

तृतीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसातीचा पहला चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	दम्पति
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	बदनामी
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	धनार्जन

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति चंद्रमा पासून अष्टम भावात आहे, अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे. तसेच कुंडली मधे हा दोष भंग नाय होत आहे अतः यांचा प्रभाव पासून तुमचा शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहणार, कधीं–मधीं पित्त आणि उष्णता होउन शारीरिक त्रास होणार. आणि वायको चा स्वास्थ्य पण सामान्य रहणार तसेच स्वभावात उष्णता चा प्रदर्शन होउ सकतात. या मुळे परस्पर सम्बन्धातील मतभेद उत्पन्न होणारे पण प्रभाव काही वेळात होणार तसेच विशेष त्रास नाय होणार. तुम्हाळा स्वतः चा सांसारिक विशेष कार्य संपन्न कराय साठी जास्ती परिश्रम तसेच विवाह मधे काही उशीर होणार पण आखेर ला सफळता होणारी आणि दांपत्य जीवन शांति युद्ध रहणार. चंद्रमा पासून मंगळ चा दोष कम होतात अतः तुम्हाळा शुभ फळ जास्ती मिळेल. तुमची चंद्र कुंडलीत मंगळ ची स्थिति अष्टम भावात आहे, अतः शरीर आणि मनाचा स्वास्थ्य सामान्य रहणार तसेच शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य मधे परिश्रम पासून सफळ होणारे. एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून तुमचे धनांचा श्रोत मधे उन्नति होणारी तसेच धन एकत्रित कराय साठी आपण समर्थ रहणारे द्वितीय भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून कुटुम्बिक शाांति मधे काही मतभेद उत्पन्न होणार. पण धन ऐश्वर्य ची स्थिति उत्तम रहणारी तृतीय भाव वर मंगळ प्रभावातून भाऊ–ताई चा सुख आणि सहयोग सामान्य रहणार पण पराक्रम मधे वृद्धि होणारी आणि मनाचा आत्मविश्वास ठोस होतात. अतः आपण स्वतः चा कार्य क्षेत्र मधे उन्नति करणारे. आपले दांपत्य जीवनाला सुखी आणि सौभाग्यपूर्ण ठेवाय साठी तुम्हाळा असी कन्या बरोबर विवाह कराय ला पाहिजे ज्यांची कुंडली मधे मांगळिक स्थान प्रथम चतुर्थ, सप्तम, अष्टम द्वादश भाव मधे शानि राहु सारख्या पापी ग्रहांची स्थिति होणार पाहिजे. असा मांगळिक दोष भंग होण्यावर तुमचे सुख आणि सौभाग्य मधे वृद्धि होणारी तसेच सर्व सांसारिक सुखांचा भोग क न दांपत्य जीवनांचे परस्पर मधुरता आणि सहयोग प्राप्त होणार तसेच सफळता पण.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगळ और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर

ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म सिंह लग्नी झाला आहे. यामुळे आपले शारीरिक आरोग्य सामान्यपणे उत्तम राहील आणि बलवानही असेल. आपल्या व्यक्तिमत्वाची विशेषता ही आहे की आपण निडर व्यक्ती असाल आणि कुणाचीही पर्वा न करता कोणत्याही उच्च नेता किंवा अधिकारीशी चर्चा कराल. आवाजामध्ये थोडा खर्जातील असेल आणि कोणतेही काम आपण गांभीर्याने कराल. जेवण कमी असेल. आयुष्यात स्वकष्टाने अपेक्षित भौतिक सुखसाधने प्राप्त कराल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. शत्रू किंवा विरोधकाना पराजित करण्यामध्ये नेहमी यशस्वी व्हाल आणि शत्रूचा मानहानी करण्यात गौरव वाटेल. उत्साहदेखील भरपूर असल्याने सांसारिक कोणतेही कार्य उत्साहपूर्वक संपन्न कराल. स्पर्धेमध्ये नेहमी यश मिळेल आणि विरोधक नेहमी भयभीत होऊन चिंतातूर असतील. पुत्रसंतती कमी असेल.

कधी कधी आपल्या स्वभावामध्ये उग्रत्वाचा भाव घष्टिगोचर होऊ शकतो. आपण एक आत्मविश्वासी व्यक्ती असाल आणि आपल्या बुद्धि, पराक्रम आणि कामावर पूर्ण विश्वास ठेवाल पण त्यामुळे कधी कधी तुम्ही दुसऱ्याला तुच्छ समजाल आणि त्यातून तुमच्या मानसन्मान व छबीवर विपरित परिणाम होऊ शकतो. माझ्यापेक्षा कोणी श्रेष्ठ नाही असाही भाव निर्माण होऊ शकतो. आपण एक सिद्धांतवादी पुरूष असाल आणि आपल्या सिद्धांतांच्या रक्षणासाठी कोणत्याही थराला जाण्याची वृत्ती असेल. मनामध्ये औदार्यही असेल आणि इतरेजनांवर प्रेम व सहानुभूती वेळोवेळी प्रदर्शित कराल. त्यामुळे समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठेत वृद्धि होईल आणि सर्व लोक आपला प्रभाव व पराक्रम स्वीकारतील.

आपल्या गुण व पराक्रमाने कोणत्याही कामात उच्च पद प्राप्त करू शकता. धार्मिक, दानी आणि विश्वासार्ह असल्याने उच्चाधिकारी किंवा एखाद्या संस्थेचा अध्यक्ष होऊ शकता. नेतृत्वक्षमता असेल आणि आपले अनुयायी आपल्याला आश्रयदाता समजून प्रामाणिकपणे आपल्या आज्ञेचे पालन करतील. धनसंपत्ती प्राप्त कराल, परंतु नोकर, कुलकार्य किंवा न्यायालयीन विवादांमुळे त्रासलेले असाल, म्हणून बुद्धिमत्तापूर्वक आपले काम पूर्ण करावे. त्याचबरोबर आपण इतर योग्य लोकांचा उचित सन्मान कराल तर सन्माननीय व्यक्ती होऊ शकता. यथोक्तम–

कृशोदरश्चारूपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्प भक्षः।
सुज्ञातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने सज्जनने विलग्ने।।

– जातकाभरणम

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मकुंडलीमध्ये द्वितीय भावामध्ये बुधाची कन्या राशी आहे. याचा प्रभावामुळे धनसंग्रह करण्याचा सदैव प्रयत्न कराल आणि त्यामुळे संकटकाळी आपल्यापाशी काही ना काही संपत्ती असेल. आदरातिथ्य करण्यामध्ये आपल्याला आनंद मिळतो. त्यामुळे वेळोवेळी आपल्या घरी इतरेजनांना आमंत्रण देत राहाल. आपले कौटुंबिक जीवन शांत व प्रसन्न असेल व कुटुंब समृद्ध असेल. त्याचबरोबर एकमेकांची सेवा व मदतीचा भाव कायम असेल. परंतु पैतृक संपत्ती आपल्याला कमीच प्रमाणात मिळेल आणि जे काही प्राप्त कराल ते स्वपराक्रम व कष्टाने मिळवलेले असेल.

हे स्थान वाणीचे आहे आणि याचा स्वामी बुध वाणीचा प्रतिनिधी आहे त्यामुळे आपल्या वाणीमध्ये माधुर्य असेल आणि इतरेंजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित कराल. त्याचबरोबर आपले विचार सरळ व स्पष्टपणे व्यक्त करू शकाल. त्याचबरोबर आपण आपल्या बुद्धिमत्तेने धनार्जन कराल आणि सुवर्ण आदि बहुमूल्य धातूंचा संग्रह करण्यास समर्थ असाल. अशाप्रकारे आपण धनवैभवाने युक्त आनंदाने आयुष्य व्यतित कराल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली माता एक सज्जन स्त्री असेल आणि घर सांभाळण्यास पूर्ण समर्थ आणि परस्पर सामंजस्य स्थापन करण्यास कुशल असेल. त्यामुळे कुटुंबामध्ये सुख शांती व समृद्धि राहील तसेच कुटुंबावर तिचे पूर्ण नियंत्रण असेल आणि सर्व कुटुंब तिच्या आज्ञेचे पालन करतील. ती कष्टाळू असली तरी कधी कधी शीघ्रकोपीपणा दाखवेल पण लगेच शांतही होत असेल.

आपले सुंदर घर असेल आणि घरामध्ये आपल्याला शांती लाभेल. आपल्या कार्यक्षेत्रामध्ये सतत व्यस्त राहात असल्याने गृहकार्यामध्ये कमीच लक्ष असेल. आधुनिक भौतिक सुखसुविधांनी संपन्न असाल आणि त्याचा उपभोग घ्याल. आपले घर फार मोठे नसले तरी सुंदर सजावटीमुळे त्याचे सौंदर्य आकर्षनीय असेल. तरूणपणीच आपले घर बनवाल. वाहनसुख लाभेल आणि वयाबरोबर यामध्ये वृद्धी होईल. पैतृक संपत्ती लाभेल. आपले उच्च शिक्षण व्यवसाय व्यवस्थापन किंवा विज्ञानासंबंधित विषयामध्ये असेल, पण उच्च शिक्षणामध्ये काही अडथळेदेखील येऊ शकतात. आपल्यासाठी तांत्रिक शिक्षण उत्तम व लाभप्रद ठरेल. कष्टाने व निष्ठेने आपले शिक्षण पूर्ण कराल. आपल्याला गुप्त धन, अंतप्रज्ञा व ज्योतिषसंबंधी विशेष ज्ञान प्राप्त होऊ शकते. शत्रूला पराजित करण्यास समर्थ असाल आणि इतरेजनांची सेवा कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक उद्योगी, साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असाल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्याची नेहमी रूची असेल आणि यासाठी प्रयत्नसुद्धा कराल. यामध्ये कमीअधिक प्रमाणात यश मिळेल. आपण उच्च श्रेणीचे धार्मिक दार्शनिक व आस्तिक व्यक्ती असाल आणि धर्म आणि शास्त्रानुसारच आपले अधिकांशी सांसारिक महत्वाची शुभ कामे संपन्न कराल. गुरूच्या प्रभावामुळे आपण मुक्त विचारधारणेचे, आत्मविश्वासी व धार्मिक क्षेत्रात उन्नती करणारे व्यक्ती असाल आणि यामध्ये आपल्याला कीर्ती व मानसन्मान प्राप्त होईल. शिकण्याची तीव्र इच्छा असेल आणि शीघ्र नवनवीन विचारांचे सृजन करण्याची क्षमता असेल. आपल्याला अंतर्ज्ञान नेहमी सत्य असेल.

आपली पत्नी बुद्धिमान असेल आणि ती शांत स्वभावाची चतुर स्त्री असेल. आपल्यामध्ये ईश्वरावरील श्रद्धा व समत्वाची भावना वृद्धावस्थेत प्रबल होईल ज्यामुळे आपण अपेक्षित आदर व ख्याती प्राप्त कराल. परिस्थितीला अनुकूल करण्यासाठी पत्नी आपल्याला साथ देईल. संतती संख्या सीमित राहील आणि त्यांचा स्वभाव चांगला राहील. संतती बुद्धिमान असेल आणि आपल्या क्षेत्रात अपेक्षित यश प्राप्त करेल. वृद्धावस्थेत आपली श्रद्धापूर्वक सेवा करतील. उच्च शिक्षण प्राप्त करतील. वैदिक ज्ञान किंवा ज्योतिषावर आपली श्रद्धा असेल. याव्यतिरिक्त आपण वाहनादि साधनांनी सुसंपन्न, शत्रूनाशक, सज्जनांची सेवा करणारे व भाग्यशाली पुत्राने युक्त असाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, सुशील व चांगल्या स्वभावाची असेल. धर्मावर तिची श्रद्धा असेल. सत्याचे अनुसरण करेल आणि आपल्यावर तिची पूर्ण निष्ठा असेल ज्यामुळे आपले दाम्पत्यजीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल. आपण एक भाग्यशाली व्यक्ती असाल आणि लाभमार्ग नेहमी प्रशस्त राहतील, पण प्रौढावस्थेमध्ये कधी कधी आर्थिक अडचणींचा अनुभव येईल. आपण स्वभावाने आदर्श प्रेमी आहात. जरी आपण कधी कधी उत्तेजित जरी झालात तरी पत्नीप्रती ईमानदार व विश्वासपात्र राहाल, पण प्रेमाचे प्रत्यक्ष प्रदर्शन क्वचितच कराल.

आपले सामाजिक क्षेत्र विस्तृत राहील. आपल्या पत्नीने तुमच्या मित्रवर्गाप्रती ईर्षा ठेवू नये, उलट अशा क्षणी प्रसन्नपणे आपल्याला तिने सहकार्य करावे आणि मनामध्ये कोणतीही शंका किंवा भ्रम ठेवू नये, अशी तुमची इच्छा असते. कौटुंबिक शांती व समृद्धि राखण्यात आपण यशस्वी ठराल. मुलांवर आपला लळा असेल आणि त्यांच्याबाबतीत अभिमानी असाल. आपण कधीही इतरांकडून आपल्या पत्नीचा अपमान कधीच सहन करणार नाहीत. मेष, धनु, मिथुन व कुंभ राशी किंवा लग्नाचा जातक आपल्याला युक्त आहेत. म्हणून विवाहासाठी याच राशीची पत्नी निवडावी. व्यवसाय क्षेत्रात आपण एखादी संस्था किंवा उद्योगात सन्माननीय पदावर कार्य करू शकता. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी धार्मिक प्रवृत्तीची, प्रसिद्ध, सत्यवादी व दयाळू स्वभावाची असेल, जेणेकरून आपले दाम्पत्य जीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले वडीलांचे आरोग्य चांगले असेल. त्यांचा स्वभाव संवेदनशील असेल आणि आनंददायक जीवन व्यतित करण्यास आवडेल. ते एखाद्या चांगल्या पदावर आपल्या कार्यक्षेत्रात असतील. त्यांची माया व पूर्ण मदत आपल्याला मिळेल आणि त्यांची सेवा करण्यास आपणसुद्धा तत्पर असाल.

आपल्यासाठी एखाद्या प्रतिष्ठित उद्योगाचा व्यवस्थापक, संचालक किंवा विक्री व्यवस्थापकाचे पद अनुकूल असेल आणि अशा क्षेत्रामध्ये आपल्याला अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त होईल. त्याचबरोबर व्यापार किंवा सरकारी क्षेत्रामध्ये एखादे उच्च किंवा सन्माननीय पदसुद्धा प्राप्त करणे शक्य होईल. आपल्याकडे प्रशासनीक क्षमता असेल आणि न थकता खूप वेळ काम करण्यास सक्षम असाल.

राजकारणात विशेष रूची असणार नाही, पण जर आपण राजकारणात प्रवेश केला तर तिथे आपल्याला उचित सन्मान, कीती व राष्ट्रीय स्तरावर ओळख प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर आपण भौतिक उपकरणे, वीडिओ किंवा संगणक आदि क्षेत्रामध्ये यश प्राप्त होईल. विद्यालय व्यवस्था, आर्थिक क्षेत्रात कृषि भूमि व मालमत्ता आणि वित्त संस्थांमध्ये आपल्याला उचित लाभ प्राप्त होईल. याव्यतिरिक्त आपण स्वभावाने कार्यशील, सज्जन व दयाळू, सत्कमी, ज्ञानवान व चांगले आचरण असणारे व्यक्ती असाल आणि समाजामध्ये यथोचित सन्मान प्राप्त होत राहील.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु पंचम भावात असेळ व त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी सामान्यतः चांगळे असेळ. ज्योतिष, संगीत व साहित्याविषयी आवड निर्माण होईळ. व यत्नपूर्वक त्याचे ज्ञान मिळवाळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व धनप्राप्तीचे योग संभवतात. महत्वाच्या राजकारणी ळोकांशी ओळखी होतीळ व त्यातून ळाभ संभवतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर असाळ. मुळांकडून सहकार्य मिळेळ. तुमची कार्यक्षमता वाढेळ. पण अन्य गोचरफळ व दशाफळ यंदा अशुभ असल्याने उपरोक्त चांगल्या फळात कधी–कधी कमतरता संभवते.

गोचरीने यंदा शनी प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. वेळप्रसंगी वातजनित रोग संभवतात. त्याचबरोबर मानसिक अशान्ती राहीळ. कौटुम्बिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. परस्पर तणाव अनुभवाळ. पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नतीच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षाचे असेळ. अत्यधिक कष्टानंतर ळाभ मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विलंब होईळ. आर्थिकदृष्टया त्रास संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अनुकूळ नाही. त्यामुळे कष्टानेच सफळता मिळेळ. ज्यामुळे मानसिक तणाव येईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीच्या दुष्प्रभावाने त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान नियमितपणे करावे. त्याचबरोबर शनिवारी मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्याने सुख–शान्ती व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभाशुभ फळे देईळ. ह्या काळात शरीरपकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. अस्वस्थपणा वाटेळ. यंदा दूरचे प्रवास होतीळ. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. कधीकाळी आर्थिक तंत्री जाणवेळ. पण सहात्या भावातीळ केतूच्या मुळे ह्या काळात समाजात तुमचा प्रभाव वाढेळ. शत्रूंना पराजित कराळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण अशुभ आहे. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळनीळ. त्यामुळे संयमपूर्वक कार्य करावे. घाईने निर्णय होऊ नये.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी एकादश भावात मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी एकादश भावात मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी एकादश भावात मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2029

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा गोचरीने शनि द्वितीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुख–शान्ती, समृद्धी राहीळ. कुटुंबातीळ सर्व ळोक मिळून–मिसळून राहीळ. त्याचबरोबर कुटुंबाची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. शत्रू किंवा विरोधी पक्ष या काळाळ पराजित होईळ. फळतः नोकरी किंवा व्यापरात कमजोर विरोधकांमुळे तुमचे उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. तुमची मानसिक स्थिती चांगळी असेळ व सांसारिक कार्ये सम्पन्न कराळ.यंदा गोचर व अन्य दशाफळ पण तुमच्या साठी अनुकूळ असेळ. त्यामुळे सफळता मिळवाळ. उत्साह वाढेळ. पण साडेसातीचा अंतिम काळ असत्याने वेळप्रसंगी त्रास संभवतो. तो कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम मिळतीळ.

यंदा गोचरीने राहू दशमात व केतू चतुर्थ भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी महत्वाचे असेळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात इच्छित सफळता मिळेळ व ळाभ होईळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात महत्वाचे पद प्राप्त कराळ. ह्या काळात राजकारणातीळ व्यक्तींशी संपर्क वाढून त्यांच्याकडून ळाभ व सहकार्य मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ, सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ व उचित सन्मान करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. आई–वडिळांच्या प्रकृतीच्या छष्टीने हे वर्ष चांगळे आहे. शारीरिक व मानसिकदृष्टया ते प्रसनन असतीळ. त्याचबरोबर अन्य व गोचर व दशाफळ अनुकूळ असल्याने ह्या वर्षात शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 20/09/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। दोन्ही अंतर्दशा चा स्वामी ग्रह एकच भाव आणि राशि मधी स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच

सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपूर्ण आहे, अतः तुमची पूर्व आकांक्षा आणि प्रयोजने सफळ होणारी. आणि विशेष कार्य सम्पन्न करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धर्नाजन होणार. तुमचा सम्पर्क प्रभावशाली रहणार. आणि मोठे अधिकारी पासून संबन्ध स्थापित होणार तसेच लाभ आणि सहयोग प्राप्त होणार उन्नति आणि परिवर्तन सम्भावना आहे. मित्र वगेरे पासून विशेष सहयोग प्राप्त होणार. प्रवास पण खूप होणार तसेच भविष्य साठी लाभ मार्ग दिसणार. विदेश प्रवास पण होउ सकतो. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी आणि मधुर सम्बन्ध रहणार भाऊ आणि ताई उन्नति करणारे.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 21/09/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि एकादश भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र अष्ट्ं भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, अनेक क्षेत्रातीळ लाभ आणि उन्नति होणारी. अधूरे कार्य पूर्ण होणारे मित्र आणि सम्वन्धी पासून सहयोग प्राप्त होणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि सगड़े फायदे होणार आणि धनार्जन पण होणार कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी आणि परस्पर मधुर संवन्ध आणि प्रेम रहणार कोणी मांगळिक कार्य पण सम्पन्न होणार. सामाजिक स्थिति चांगली रहणारी तसेच सम्मान प्राप्त होणार शत्रु पासून अडचणे उत्पन्न होउ सकतो.

हा समय तुमचे शुभ आणि महत्वपूर्ण आहे अतः आपण परिश्रम पासून सफळता अर्जित करणारे. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी, उन्नती मार्ग वर सफळ होणारे तसेच कार्य क्षेत्र मधे सफळता प्राप्त होणारी. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार एका–एकी

धन लाभ पण होउ सकतो कुटुम्ब शान्ती आणि सहयोग रहणार. स्वास्थ्य चांगला रहणार आणि शत्रु पासून काही त्रास नाय होणार ज्योतिष आध्यात्मिक मधे चे उत्पन्न होणारी तसेच अनुभव पण. शारीरिक स्वास्थ्य वर विशेष काळजी ठेवा.